अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का विकास
(Evolution of International Organisation)

यह एक आम धारणा है कि प्रथम विश्व युद्ध के भयावह परिणामों ने ही दुनिया के देशों को 1919 में League of Nations (राष्ट्रसंघ) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना के लिए प्रेरित किया। निःसंदेह इस प्रकार की धारणा को निराधार नहीं कहा जा सकता। परन्तु साथ ही साथ इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि राष्ट्रसंघ पूर्ण रूप से नवीन एवं अनोखा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन नहीं था। यदि इसकी स्थापना में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान शांति के लिए किये गये प्रयासों एवं आन्दोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तो साथ ही साथ प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की प्रक्रियाओं एवं संस्थाओं ने भी राष्ट्रसंघ की प्रकृति एवं संरचना को प्रभावित किया। यह कहा जा सकता है कि –

"The League of Nations, as designed at the Paris peace conference, combined much that was new with much that was old" (पेरिस शांति सम्मेलन के समय राष्ट्रसंघ की जो रूप रेखा तैयार की गई उसमें नई एवं पुरानी दोनों बातें मिश्रित थीं।)

शांति के लिए संगठन का समर्थन राष्ट्रसंघ की स्थापना के सदियों पूर्व होता आ रहा है। 14वीं सदी के प्रारम्भ से लेकर 18वीं सदी के अन्त तक बहुत से दार्शनिकों ने शांति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की अपनी योजनाएँ प्रस्तुत कीं। 14वीं सदी में दांते ने अपनी पुस्तक Demonarchia (डीमोनार्किया) में शांति एवं एकता के लिए ईसाई जगत के संगठन का समर्थन किया। Pierre Dubois ने आक्रमणकारी के विरुद्ध दण्ड व्यवस्था के माध्यम से शांति को बनाये रखने के लिए ईसाई जगत के विभिन्न देशों

एक Confederation (परिसंघ) की स्थापना पर बल दिया। Henery IV ने अपनी पुस्तक Grand Designs (1603), William penn, Abbede Saint pierre तथा जर्मन दार्शनिक Emmanual Kant ने अपनी पुस्तक Essay on Eternal peace में अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कुछ योजनाएं प्रस्तुत की।

लेखकों एवं दार्शनिकों के द्वारा शांति की स्थापना के लिए प्रारंभिक योजनाएंत प्रस्तुत की गई। परन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व के जिन शांति आन्दोलनों एवं प्रयासों ने राष्ट्रसंघ की प्रकृति को निर्धारित किया उनमें उनका कोई महत्वपूर्ण हाथ नहीं रहा। जिन शांति प्रयासों एवं आन्दोलनों ने राष्ट्रसंघ की प्रकृति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की उनमें सर्वप्रथम Concert by Europe (यूरोपीय व्यवस्था) का नाम लिया जा सकता है।

Concert of Europe 1815 में, नेपोलियन के युद्धों के विजयी राष्ट्रों :— England, Austri Prussia और Russia द्वारा कायम की गई थी, इस व्यवस्था के द्वारा यूरोप के महान राष्ट्रों पर यह दायित्व रखा गया था कि वे शांति भंग करने वाले राष्ट्रों के विरुद्ध कार्यवाई करके विश्व में शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखें।

राष्ट्रसंघ की परिषद तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद पर यूरोपीय व्यवस्था की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। राष्ट्रसंघ के निर्माताओं ने परिषद के निर्माण एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्माताओं ने Security Council के निर्माण के लिए यूरोपीय व्यवस्था को ही प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के विकास में अस्त्रशस्त्रों की दौड़ को रोकने तथा शस्त्र निर्माण की प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप देने के लिए 19वीं सदी उत्तरार्द्ध में किये गये प्रयासों ने

योगदान किया। ऐसे प्रयासों की परिणति 1899 तथा 1907 के Hague conferences (हेग सम्मेलनों) में हुई। दोनों Hague conferences के प्रभावों को राष्ट्रसंघ की Assembly (सभा), Secretariat (सचिवालय) तथा P.C.I.J स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय पर देखा जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के विकास में 19वीं सदी में स्थापित कई सार्वदेशिक अन्तर्राष्ट्रीय संघों की महत्ता को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। ऐसे संघों में universal postal union (विश्वव्यापी पोस्टल संघ) का 1874 का नाम उल्लेखनीय है। ऐसे संघों की स्थापना प्रशासकीय समस्याओं से जूझने के लिए हुई थी। Rhine commission (राइन आयोग) European Danube commission - 1856 (यूरोपियन डेनूब आयोग) जैसे संघों की स्थापना स्थानीय ~~परिस्थि~~ परिस्थितियों से निपटने के लिए हुई थी। इन सार्वदेशिक संघों का कार्यक्षेत्र यद्यपि बहुत सीमित था परन्तु इनके कार्य करण ने विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया और आगे चलकर राष्ट्रसंघ के काल में ऐसे कई संघों की स्थापना की गई। I.L.O (अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन) इसका एक अच्छा उदाहरण है।

इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्रसंघ के संगठन एवं कार्यकरण प्रणाली के दृष्टांत पिछले एक सौ वर्षों से भी अधिक समय से पाये जाते थे और राष्ट्रसंघ की स्थापना पर उनकी छाप भी है। परन्तु प्रथम विश्वयुद्ध की विभिषिका ने विश्व में शांति की स्थापना के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के निर्माण की गति को तेज कर दिया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान शांति एवं सुरक्षा की स्थापना के लिए जो आन्दोलन, प्रस्ताव एवं योजनाएं सामने

P-4

आयी, उन्हे राष्ट्र संघ के निर्माण की तत्कालिन प्रेरक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है। भविष्य में युद्ध को रोकने एवं शांति की स्थापना के लिए विभिन्न देशों के कई व्यक्तियों एवं शांति समूहों द्वारा कई योजनायें प्रस्तुत की गयी। इन योजनाओं की संख्या इतनी अधिक थी कि उन सब का नाम गिनाना मात्र भी संभव नहीं है। फिर भी ऐसी कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं का नाम लिया जा सकता है। युद्ध शुरु होने के तुरत बाद Switzerland के Pro. Rappard ने स्थायी विश्व शांति के आधार के अध्ययन के लिए एक समिति की स्थापना की। इंग्लैंड में Lord Bryce के नेतृत्व में व्यक्तियों के एक समूह ने विश्वशांति के लिए कुछ निश्चित प्रस्ताव रखे। अमेरिका में 1815 में the league to Enforce peace (शांति कार्यान्वित करने के लिए संघ) नामक संगठन भूतपूर्व राष्ट्रपति Taft की अध्यक्षता में स्थापित की गई। Sweden, Denmark तथा Norway ने भी 1919 में अपनी शांति योजनायें प्रकाशित की फ्रांसीसी सरकार ने भी शांति की स्थापना के लिए सुझाव प्रस्तुत करने के लिए एक समिति की स्थापना की जिसने महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे।

South Africa (दक्षिण अफ्रिका) के General J.C. Smith Smuts ने शांति सम्मेलन के समय एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो राष्ट्रसंघ के लिए बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। परन्तु राष्ट्रसंघ की स्थापना के लिए जितने भी प्रस्ताव निश्चित रूप से स्वकारी तत्कालिन अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन (Wilson) का था। यो तो विल्सन ने अपने Fourteen points में सबसे अन्त में भविष्य में युद्ध को रोकने तथा शांति को बनाये रखने के लिए प्रस्ताव रखा था, परन्तु निश्चित रूप से इसकी रूप रेखा नहीं था। विल्सन ने अपने 14वें सूत्र में यह कहा था:—

" A general association of nations must be formed under specific convenants for the purpose of affording mutual guarantees of political independence and ~~guarantees~~ territorial integrity to great and small states alike" (सभी बड़े तथा छोटे राष्ट्रों को समान रूप से राजनीतिक स्वतंत्रता एवं प्रादेशिक अखण्डता की प्रत्याभूति प्रदान करने के उद्देश्य से राष्ट्रों के एक सामान्य संघ का निर्माण आवश्यक है।)

विल्सन ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना के लिए ~~Phill~~ Phillimore plan तथा French Report में उद्धृत विचारों का अध्ययन किया था और उसके पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के सम्बन्ध में अपना मसविदा प्रस्तुत किया था। विल्सन ने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के सम्बन्ध में अपना दूसरा एवं तीसरा मसविदा भी प्रस्तुत किया। उधर ब्रिटेन का सरकारी मसविदा भी प्रस्तुत किया हुआ। अमेरिका तथा इंग्लैण्ड के बीच जिन बातों पर सहमति हुई उन्हें एक अलग मसविदे में रखा गया जिसे आमतौर पर ~~Hust~~ Hurst-miller Draft (हर्स्ट-मिलर मसविदा) के नाम से जाना जाता है। इसी ड्राफ्ट को शांति सम्मेलन के league of Nations Commission के समक्ष प्रस्तुत किया गया जिसमें राष्ट्रसंघ की कार्यप्रणाली का उल्लेख था। राष्ट्रसंघ ~~की कार्यप्रणाली~~ का covenant वर्साय संधि का एक अभिन्न अंग बना और 10 जनवरी 1920 को वर्साय संधि के साथ साथ राष्ट्रसंघ अस्तित्व में आया।

— x —

The end